VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS
M
N 03 SEP 2017
SUBMITTED IN 3 HOURS
RECEIVED

GENERAL STUDIES (TEST CODE : 1023)

Name of Candidate	Kanta Dangri		
Medium Eng./Hindi	Hindi	Registration Number	42370
Center	Mukharjee Nagar	Date	03/09/17

INDEX TABLE

Q. No.	Maximum Marks	Marks Obtained
1	12.5	
2	12.5	
3	12.5	
4	12.5	
5	12.5	
6	12.5	
7	12.5	
8	12.5	
9	12.5	
10	12.5	
11	12.5	
12	12.5	
13	12.5	
14	12.5	
15	12.5	
16	12.5	
17	12.5	
18	12.5	
19	12.5	
20	12.5	

Total Marks Obtained:

Remarks:

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न-पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. There are TWENTY questions printed in ENGLISH & HINDI
   इसमें बीस प्रश्न हैं अंग्रजी और हिन्दी में छपे हैं।
3. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
4. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
5. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
6. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
7. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

75, 3rd Floor, Old Rajinder Nagar Market, Near Axis Bank, New Delhi – 110060

103, 1st Floor, B/1-2, Ansal Building, Behind UCO Bank, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi – 110009

EVALUATION INDICATORS

1. Alignment Competence
2. Context Competence
3. Content Competence
4. Language Competence
5. Introduction Competence
6. Structure - Presentation Competence
7. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Answer all the questions in NOT MORE THAN 200 WORDS each. Content of the answers is more important than its length. All questions carry equal marks.

12.5X20=250

1. The evolution of temple-building in India can be attributed to factors such as changing form of worship, improvement in the skills of the craftsmen and the increase in funding provided by kings and rich merchants. Examine.

   भारत में मंदिर-निर्माण के विकास के लिए पूजन-अर्चन के बदलते स्वरूपों, कारीगरों के कौशल में सुधार एवं राजाओं और अमीर व्यापारियों द्वारा जाने वाले वित्त-पोषण में बढ़ोत्तरी को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। परीक्षण कीजिए।

भारत में मंदिर निर्माण की कला का प्रारंभ गुप्त काल से माना जाता है।

- प्रारंभिक स्वरूप में मंदिरों को ध्यान, कीर्तन, पूजा प्रार्थना के रूप में माना जाता था ~~फरं~~ जैसे - गुप्त काल में ~~निर्मित~~ निर्मित।

- कालान्तर में मंदिर निर्माण पर निम्नलिखित प्रमुख तत्वों का प्रभाव पड़ा -

पूजन - अर्चन के स्वरूप में परिवर्तन - प्रारंभिक काल में मंदिर अत्यन्त साधारण एवं छोटे स्वरूप वाले स्थल होते थे परंतु कालान्तर

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

में गर्भगृह, चित्र कक्ष इत्यादि की अवधारणा सामने आई।

स्थापत्य कला का विकास -

गुप्त काल के अधिकांश मंदिर या तो जमीन पर या थोड़े ऊंचे चबूतरों पर बनाये जाते थे परंतु स्थापत्य कला के विकास के साथ शिखर, विमान इत्यादि अवधारणायें, मंदिरों में मूर्तिकला एवं चित्रकला का प्रयोग किया जाने लगा और भव्यता का समावेश मंदिरों में होने लगा यथा - कोणार्क का सूर्य मंदिर, महाबलिपुरम के रथ मंदिर इत्यादि।

- मंदिरों में गर्भगृह, परिक्रमा पथ, सुंदर द्वार की अवधारणा सामने आयी

वित्तीय सहयोग - मंदिरों को दी जाने वाली

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वित्त राशि में बढ़ोत्तरी से मंदिर पूजा-अर्चना के साथ-साथ सामर्थ्य प्रदर्शन का स्रोत भी बन गये। जैसे- दक्षिण भारत में मदुरै का लेपाक्षी मंदिर, दिलवाड़ा का जैन मंदिर इत्यादि।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मंदिरों के विकास पर पूजा अर्चना के समानांतर अन्य तत्वों ने भी प्रभाव डाला है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

2. Metal casting in India appears to be one of the oldest sculptural traditions. Discuss the significance of cire-perduor or "lost wax" technique in the sculptural tradition of India with examples from different regions.

भारत में धातु की ढलाई, सर्वाधिक प्राचीन मूर्तिकला परंपराओं में से एक प्रतीत होती है। भारत की मूर्तिकला परंपरा में सीर पेरदयू या "लॉस्ट वैक्स" (तरल धातु प्रक्रिया) तकनीक के महत्व पर विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त उदाहरणों सहित चर्चा कीजिए।

भारत में मूर्तिकला की परम्परा सिंधु घाटी सभ्यता से ही विद्यमान रही है। सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त नर्तकी की मूर्ति, आँख मूंदे ध्यानावस्था में स्थित पुजारी की मूर्ति इसका प्रमुख प्रमाण है।

मूर्तिकला की कई तकनीकों में एक मुख्य तकनीक सीर पेरदयू या लॉस्ट वैक्स की तकनीक है जिसके अन्तर्गत सर्वप्रथम _

तकनीक →
→ मिट्टी से किसी मूर्ति का सांचा बनाया जाता है।
→ सांचे में छेद करके उसमें पिघला

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हुआ ~~मोम~~ धातु भरा जाता है

→ मूर्ति को सूखने देने पर बाहरी मिट्टी के आवरण को हटाकर उस पर धातु की पुताई की जाती है

→ छेद करके और मोम को पिघलाकर मोम को निकाल दिया जाता है

यह एक उन्नत तकनीक है जो सिंधु घाटी सभ्यता से ही प्रचलित है

महत्व –

1. इस प्रकार बनाई गई मूर्ति अत्यन्त आकर्षक होती है

2. मूर्ति की चिरकालिक सुरक्षा होती है और जल्दी खराब नहीं होती।

3. मूर्ति को सजावट या ऐतिहासिक महत्व के हिसाब से संजोकर रखा जा सकता है

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

उदा॰ -

- चोल काल में प्राप्त नटराज की मूर्ति
- सिंधु घाटी सभ्यता में प्राप्त नर्तकी की मूर्ति

3. India's middle ages brought about a very rich tradition of devotional literature of remarkable merit which dispels the assumption of a dark period of India's history. Elucidate.

भारतीय मध्यकाल ने उल्लेखनीय विशेषता वाले भक्तिपरक साहित्य की एक अत्यंत समृद्ध परंपरा प्रस्तुत की जो भारतीय इतिहास में एक अंध-युग की अवधारणा को ख़ारिज करती है। स्पष्ट कीजिए।

भारतीय मध्यकाल अपनी समृद्ध परम्परा के साथ भक्ति आन्दोलन हेतु प्रसिद्ध है जिसके अन्तर्गत दो मुख्य धारायें हैं -

(i) निर्गुण भक्ति धारा

(ii) सगुण भक्ति धारा

भक्ति आंदोलन

निर्गुण धारा → ईश्वर, निराकार, निर्गुण → शंकराचार्य, कबीर

सगुण धारा → ईश्वर सगुण, साकार → रामानुज, सूरदास, मीरा

भक्ति आंदोलन : उदय के कारण -

→ ब्राह्मणवादी साहित्यिक एवं धार्मिक परंपरा के कारण शूद्रों एवं महिलाओं के साथ भेदभाव

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

(ii) ज्ञान के प्राप्ति स्रोत को सीमित करना

(iii) अंधविश्वास, अज्ञान को बढ़ावा

(iv) समाज में असमानता, पितृसत्ता(मकता) की स्थापना।

(v) व्यक्ति की स्वतंत्रता का ह्रास इत्यादि।

भक्ति आंदोलन : स्वरूप

भक्ति आंदोलन को ईश्वरीय ज्ञान एवं प्रेम को पुराणों, सूक्तियों के दायरे से बाहर निकालकर सर्वजन तक संभव बनाया।

- समाज में समानता को बढ़ावा दिया
- ईश्वर प्रेम को सभी के लिए सुलभ बनाया।
- अंधविश्वास पर कुठाराघात किया जैसे-
- व्यक्तिवादी विचारधारा का प्रसार

→ समाज में प्रेम, भाईचारा की स्थापना

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जैसे - मीरा ने कहा , " पायो री मैंने राम रतन धन पायो ।"

- इस प्रकार ईश्वरीय प्रेम का आविर्भाव

अतः भक्तिकाल समाज को अंधविश्वास से निकालकर चेतन युग में लाने वाला प्रमुख युग रहा।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

4. The outbreak of World War II in 1939 divided the nationalists over the next course of action in the freedom struggle. Elaborate. In this context, also examine the factors that led to INC launching the Quit India Movement.

1939 में द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ जाने से राष्ट्रवादियों के बीच स्वतंत्रता संग्राम में आगे अपनायी जाने वाली रणनीति में मतभेद होने से विभाजन हो गया। विस्तारपूर्वक बताइए। इस संदर्भ में, INC द्वारा भारत छोड़ो आंदोलन को आरम्भ करने के लिए उत्प्रेरित करने वाले कारकों का भी परीक्षण कीजिए।

1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध पश्चात राष्ट्रवादियों में तीन प्रमुख वर्ग उभरकर सामने आये -

(i) युद्ध में ब्रिटेन का साथ देना चाहिए क्योंकि ब्रिटेन का पक्ष उचित है

समर्थक - गाँधीजी, राजेन्द्र प्रसाद, वल्लभ-भाई पटेल इत्यादि।

(ii) युद्ध में ब्रिटेन को साथ न देकर स्वतंत्रता आन्दोलन को तेज किया जाना चाहिए

जैसे - सुभाष चन्द्र बोस, क्रांतिकारी

(iii) युद्ध में न तो ब्रिटेन को साथ दिया जाना चाहिए और न स्वतंत्रता संग्राम

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

छेड़ना चाहिए बल्कि तटस्थ भाव रखना चाहिए)

समर्थक - जवाहर लाल नेहरू

INC (भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा भारत छोड़ो आन्दोलन शुरू करने के कारण -

1. युद्ध के कारण व्याप्त महंगाई, मुद्रास्फीति के कारण

2. ब्रिटेन सरकार द्वारा भेजे गये क्रिप्स मिशन की असफलता

3. भारतीयों से बिना मंत्रणा किये भारतीय सेना का युद्ध में प्रयोग।

4. ब्रिटेन सरकार द्वारा भारतीयों की स्वाधीनता की मांग पर कोई ध्यान नहीं दिया जाना इत्यादि।

मूल्यांकन -
भारत छोड़ो आन्दोलन मुख्यतया एक जनान्दोलन था, स्वत: स्फूर्त संग्राम था

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जिसमें महिलाओं, विद्यार्थियों, व्यापारियों, पत्रकारों, किसानों, मजदूरों सभी ने भाग लिया। इसी आन्दोलन के बाद भारतीयों ने 'भारत छोड़ो' के नारे के साथ अंग्रेजों को यह दिखा दिया कि भारत में उनका और शासन करना मुश्किल है।

5. How did the Indian industrialists contribute to the freedom struggle? Did the emergence of the socialistic trend during the later period of the struggle deter them from supporting the freedom struggle? Analyze.

भारतीय उद्योगपतियों ने स्वतंत्रता संग्राम में किस प्रकार योगदान दिया? क्या स्वतंत्रता संग्राम की उत्तरवर्ती अवधि में समाजवादी प्रवृत्ति के उद्भव ने उन्हें स्वतंत्रता संग्राम का समर्थन करने से विरत (रोक) कर दिया? विश्लेषण कीजिए।

भारतीय उद्योगपतियों का झुकाव एवं समर्थन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की ओर था। भारतीय उद्योगपति पहले भारतीय थे, राष्ट्रीय भावनाओं से परिपूर्ण थे तत्पश्चात वे अपने आप को व्यापारी समझते थे।

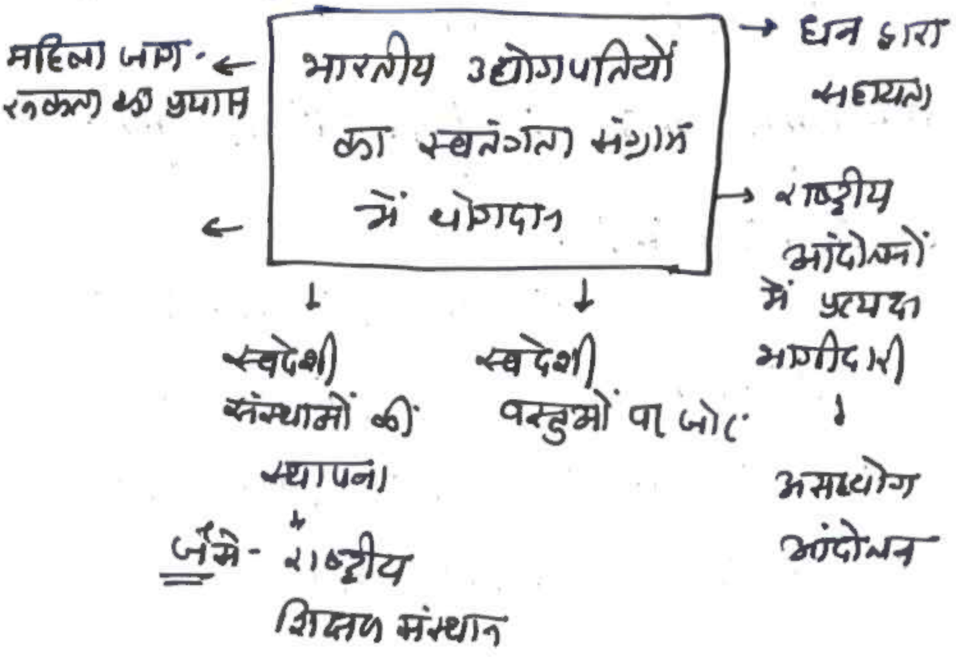

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

स्वतंत्रता संग्राम की समाजवादी धारा -

1920 पश्चात

भारतीय राजनीति में समाजवादी धारा का उदय हुआ जिसके अन्तर्गत -

- ब्रिटिश साम्राज्य के साथ-साथ पूंजीवादी शोषक वर्ग का विरोध
- जमींदार वर्ग, भूमिपति वर्ग का विरोध
- मजदूर वर्ग को उद्योग के लाभ मे भागीदारी का समर्थन
- श्रम कानूनों का समर्थन

समाजवादी धारा का पूंजीपतियों पर प्रभाव -

नकारात्मक प्रभाव -

मार्क्सवादी दल इत्यादि के द्वारा पूंजीपतियों के पूर्ण उन्मूलन का नारा दिया गया जिसके कारण पूंजीपति वर्ग में विरोध की भावना जागी

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

सकारात्मक प्रभाव :-

भारतीय समाजवादी आंदोलन उग्र प्रकार का आन्दोलन न होकर सभ्यता आधारित समतावादी समाज के नारे पर आधारित था।

- भारतीय पूंजीपति वर्ग इसका समर्थक था क्योंकि वे मानते थे भारत में प्रमुख क्षेत्रों का विकास राज्य द्वारा ही किया जाना चाहिए। 1930 के दशक में 'बॉम्बे प्लान' इसी की अभिव्यक्ति थी।

अतः भारतीय पूंजीपति वर्ग समाजवाद का विरोधी न होकर समर्थक ही था।

6. The social-religious reform movements of the 19th and 20th century in British India not only tried to purge the Indian society of various social evils but also prepared the ground for the Indian freedom struggle. Analyze.

ब्रिटिश भारत में 19वीं और 20वीं शताब्दी के सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों ने न केवल भारतीय समाज को विभिन्न सामाजिक कुरीतियों से मुक्त करने का प्रयास किया बल्कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए एक आधार भी तैयार किया। विश्लेषण कीजिए।

ब्रिटिश भारत में समाज सुधार एवं धार्मिक सुधार भारतीयों के रवैये में, मान तक पहुंच, समतावादी समाज, शोषण रहित राष्ट्र की स्थापना की धारणा में सहायक है।

समाज सुधार एवं धार्मिक सुधार आंदोलन:

समाज पर प्रभाव

महिला समानता	जाति प्रथा पर आघात
↓	↓
बाल विवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा का विरोध यथा-	- जातिगत असमानता पर कुठाराघात
राजा राम मोहन राय द्वारा 'ब्रह्म समाज'	- मंदिर प्रवेश आंदोलन
ज्योतिबा फुले ..	- आत्मसम्मान आंदोलन
ईश्वर चन्द्र विद्यासागर	- शूद्रों को भी बराबरी का अधिकार
	- अम्बेडकर, गांधी, पेरियार

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के आधार के रूप में —

→ राष्ट्रवाद के उदय में सभी प्रमुख वर्गों को साथ आने का आह्वान

→ कर्म के नियम को महत्व, साहस, विवेक की धारणा पर बल

विवेकानंद – " निर्बलता मृत्यु है ... पाप है"

→ ब्रिटिश शोषण के दुष्परिणामों के सम्बन्ध में राजनीतिक चेतना जाग्रत की।

→ महिलाओं तथा सभी जातियों को एक-साथ मिलकर स्वतंत्रता संग्राम हेतु प्रेरित किया।

→ ब्रिटिश सत्ता के सुधारों के प्रति 1857 की क्रांति पश्चात उभरे नकारात्मक प्रभाव को जनता के समक्ष प्रस्तुत किया

→ विभिन्न धर्मों (यथा - मुस्लिम धर्म - अहमदिया आन्दोलन, पारसी - पारसी रहनुमाई समाज)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

में ज्ञान, चेतना, वैज्ञानिक तर्क प्रसारित करने का प्रयास।

इस प्रकार समाज सुधारकों ने सामाजिक- धार्मिक सुधार के साथ- साथ राजनीतिक चेतना जागृत करने की दोहरी भूमिका निभाई।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

7. The dawn of 19th century was marked by large scale expansion of the British empire into India, especially during the governorship of Wellesley. Elaborate.

19वीं शताब्दी की आरंभिक अवधि, विशेष रूप मे गवर्नर-जनरल वेलेजली का शासनकाल, भारत में बड़े पैमाने पर ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार के लिए उल्लेखनीय रही थी। विस्तारपूर्वक बताइए।

भारतीय इतिहास में वेलेजली का शासनकाल ब्रिटिश साम्राज्य के लिये उन्नति का काल था। इस काल में वेलेजली द्वारा मुख्यतया सहायक संधि की प्रणाली का शुभारंभ किया गया जिसकी शुरुआत 1798 में हैदराबाद के साथ की गई सहायक संधि थी।

वेलेजली द्वारा अपनाई गति नीति -

सहायक संधि की प्रणाली के अन्तर्गत सम्बन्धित राज्य में एक अधिकारी की नियुक्ति की जाती थी ताकि विदेशी मामलों में सलाह दी जा सके परन्तु व्यावहारिक रूप में -

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

- यह सम्बन्धित राज्य को ब्रिटिश राज पर आश्रित करने के समान था।
- ब्रिटिश राज्य छोटे-छोटे मामलों में हस्तक्षेप करता था।
- आंतरिक रूप से सर्वोच्चता एवं बाहरी रूप से सम्प्रभुता दोनों ब्रिटिश अधिकारियों में निहित हो जाती थी।

⇒ 1798 - हैदराबाद
1799 - मैसूर
1817 - पूना

इस प्रकार स्पष्ट है कि सहायक संधि प्रणाली वास्तव में सहायक संधि न होकर राज्य को स्वयं पर आश्रित करने वाली होती थी। इस नीति के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्य ने अपना

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

सत्ता विस्तार किया जिसे कालान्तर में
अन्य ब्रिटिश अधिकारियों ने जारी रखा।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें।)

8. United States entered the Vietnam war incrementally, in a series of steps between 1950 and 1965. Elucidate. Also analyse the reasons for America's failure in the war.

संयुक्त राज्य अमेरिका, 1950 से 1965 के बीच चरणबद्ध श्रृंखला में वियतनाम युद्ध में अधिकाधिक संलग्न होता गया। स्पष्ट कीजिए। साथ ही, इस युद्ध में अमेरिका की विफलता के कारणों का विश्लेषण भी कीजिए।

द्वितीय विश्वयुद्ध पश्चात विश्व राजनीति दो प्रमुख ध्रुवों में बँट गई थी-

(i) पूंजीवादी राष्ट्र

(ii) समाजवादी राष्ट्र

इन्हीं दो विचारधाराओं का महाशक्ति बनने का प्रयास वियतनाम युद्ध (1950 - 1965) में स्पष्ट परिलक्षित होता है

<u>कारण</u> -

1. उत्तरी वियतनाम में पूंजीवादी समर्थक एवं दक्षिणी वियतनाम में साम्यवादी समर्थक

2. महाशक्तियों के हितों का आरोपण

3. वियतनाम में स्वतंत्रता संघर्ष

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अमेरिका की भागीदारी :-

1950 पश्चात् द० वियतनाम में हो चिन्ह मिन्ह द्वारा साम्यवादी आन्दोलन तीव्र होने पर अमेरिका ने तत्कालीन सरकार को हथियार एवं समर्थन देना प्रारंभ किया जिससे यह क्षेत्र 'शीतयुद्ध का अखाड़ा' बन गया।

- साम्यवादी व्यवस्था को परास्त करने तथा आइजनहावर सिद्धान्त के अनुसार अमेरिका इसमें अत्यधिक संलग्न होता गया।

अमेरिका की विफलता के कारण -

- अमेरिका वियतनाम की जनता के स्वतंत्रता संघर्ष की प्रकृति को समझ नहीं पाया।
- वियतनामियों द्वारा गोरिल्ला युद्ध प्रणाली का अमेरिकी सेना पर प्रभाव

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

(iii) साम्यवादी रूस द्वारा विद्रोहियों को लगातार सहायता देना।

(iv) वियतनाम की अमेरिका से भौगोलिक दूरी।

(v) वियतनाम का साम्यवादी देशों यथा-चीन, रूस के पास स्थित होना।

इस प्रकार वियतनाम युद्ध अमेरिकी युद्ध-नीति की विफलता का परिचायक है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

9. Even though there is much that is wrong with the European Union (EU), its achievements can not be discounted either. Discuss.

यद्यपि यूरापीय संघ (EU) में बहुत-सी कमियां हैं, फिर भी इसकी उपलब्धियों को कमतर नहीं आंका जा सकता है। चर्चा कीजिए।

यूरोपीय संघ की स्थापना 1993 में यूरोपीय राष्ट्रों द्वारा आर्थिक सीमाओं को समाप्त करने के लिये किया गया प्रयास है।

→ यह यूरो मुद्रा के माध्यम से आर्थिक एकीकरण का अच्छा उदाहरण है।

EU ⇒ कमियाँ →

- यूरोपीय संघ के राष्ट्रों में कई राष्ट्र PIGS (पुर्तगाल, आयरलैण्ड, ग्रीस, स्पेन) का राजकोषीय घाटे के चक्र में पड़ना।
- सदस्य राष्ट्रों में शरणार्थी समस्या पर आपसी सहमति का अभाव यथा - जर्मनी शरणार्थियों के पक्ष में जबकि फ्रांस विपक्ष में।
- हाल ही में ब्रिटेन द्वारा किया गया ब्रेक्सिट

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

- यूरोपीय संघ राष्ट्रों में आर्थिक विकास पर का रुकना।
- अमेरिका का TATIPL (ट्रांस अटलांटिक ट्रेड इन्वेस्टमेंट पार्टनरशिप) पर अमेरिका का पूर्ण लेना।

⇒ EU की प्रासंगिकता -

- यूरोपीय संघ विश्व के सर्वाधिक विकसित राष्ट्रों में एक है
- सदस्य राष्ट्रों में राजनीतिक, आर्थिक विवादों का शांतिपूर्ण समाधान।
- अमेरिका द्वारा पेरिस समझौते से पीछे हटने पश्चात अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में मुख्य भूमिका
- अन्य राष्ट्रों द्वारा किया जा रहा व्यापार वृद्धि का प्रयास जैसे - भारत - यूरोपीय संघ का BTIA (बाइलेटरल ट्रेड इन्वेस्टमेंट एग्रीमेंट)

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

इस प्रकार यूरोपीय संघ की महत्ता आज भी ~~बरकरार~~ बरकरार है आवश्यकता है EU अपनी नीतियों में स्पष्टता एवं दृढ़ता लाये ताकि विश्व राजनीति में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाये रख सके।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

10. Despite being a failure, 1848 revolutions remain a watershed event in European History. Elaborate.

यद्यपि 1848 की क्रांतियाँ विफल हो गई थीं तथापि ये यूरोपीय इतिहास में ऐतिहासिक घटना बनीं। विस्तारपूर्वक बताइए।

1848 की क्रांतियां मूल रूप से स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु की गई क्रांतियां हैं जिसमें मुख्यतः निम्न क्रांतियां प्रमुख थी -

(i) इटली में सीमाओं का एकीकरण का प्रयास

(ii) जर्मनी का एकीकरण

(iii) रूस में जार की तानाशाही के खिलाफ

(iv) फ्रांस में गणतंत्रवादी, समाजवादी विचारधारा

विफलता -

- ब्रिटेन, फ्रांस साम्यवादी बाढ़ शामिल नहीं बने क्योंकि यहां लोकतांत्रिक मूल्य मजबूत से जमे हुए थे

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

- सरकारों ने समाजवादी विचारधारा का प्रभाव रोकने के लिए सामाजिक सुरक्षा की योजनाएं चलाई।
- क्रांतिकारी पूर्ण रूप से योजनाएं नहीं बना पाये थे।

<u>प्रभाव</u>

- श्रम सुधार कानून बने।
- मजदूरों की स्थिति में सुधार।
- मानवीय गरिमा, मूल्यों की स्थापना
- स्वतंत्रता के साथ समानता पर जोर
- सामाजिक सुधार की योजनायें चलाई गईं।
- कल्याणकारी सरकार की अवधारणा सामने आई।

11. The events that led to the American Revolution had causes rooted in the social, economic, political and ideological context of that time. Elaborate. Also, bring out the influence that the American Revolution had on the French Revolution.

जो घटनाएं अमेरिकी क्रान्ति के लिए उत्तरदायी रहीं, उनकी जड़ें उस समय के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं वैचारिक संदर्भ में निहित थी। सविस्तार बताइए। साथ ही, फ्रांसीसी क्रान्ति पर अमेरिकी क्रान्ति के प्रभावों को भी स्पष्ट कीजिए।

अमेरिकी क्रांति - (1776)

अमेरिकी क्रांति का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश वाणिज्यवादी नीतियों से छुटकारा पाना तथा स्वतंत्र राष्ट्र की स्थापना करना था। इसका प्रमुख नारा था, "प्रतिनिधित्व बिना कर नहीं।"

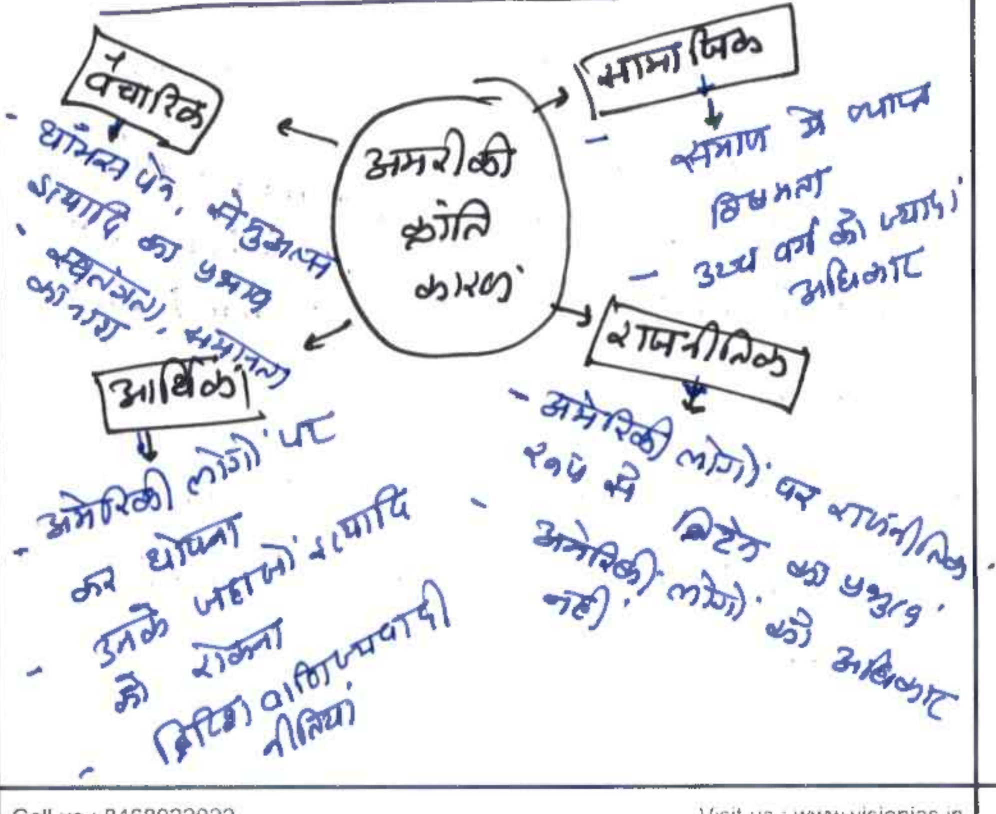

अमेरिकी क्रांति का फ्रांसीसी क्रांति पर प्रभाव - (1789 - 1815)

- अमेरिकी क्रांति का डोमिनो इफेक्ट फ्रांसीसी क्रांति पर भी पड़ा।
- फ्रांसीसी सेना को अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में अमेरिका की सहायता हेतु भेजा गया था जिसका फ्रांस लौटने पर लुई 16वें के अत्याचारी शासन के खिलाफ विद्रोह हुआ।
- फ्रांसीसी समाज भी तीन प्रमुख वर्गों में विभक्त था जिसमें कर केवल सामान्य जनता पर आरोपित था।

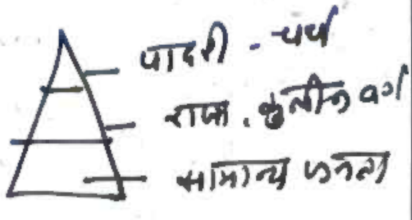

- अमेरिकी क्रांति के स्वतंत्रता, समानता के नारे ने फ्रांसीसियों को अत्यन्त प्रभावित किया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इस प्रकार फ्रांसीसी क्रांति के कई उत्प्रेरित कारकों में एक प्रमुख कारक अमेरिकी क्रांति भी था

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

12. In the context of Punjab crisis it can be argued that language, religion and regionalism combined into a potentially explosive situation which political elites struggled to contain. Examine.

पंजाब संकट के संदर्भ में यह तर्क दिया जा सकता है कि भाषा, धर्म और क्षेत्रवाद के सम्मिश्रण ने संभावित विस्फोटक स्थिति उत्पन्न कर दी जिसे नियंत्रित करने के लिए राजनीतिक संभ्रान्त वर्ग ने संघर्ष किया। परीक्षण कीजिए।

पंजाब में खालिस्तान की मांग मूलतः भाषा, धर्म एवं क्षेत्रवाद के सम्मिलन से पैदा हुई थी।

भाषा के आधार पर -

खालिस्तान मूलतः कहा गया कि पंजाबी लोगों के लिये अलग से पंजाब प्रांत की स्थापना हेतु किया गया।

धर्म -

खालिस्तान की मांग के पीछे प सिख धर्म हेतु अलग राज्य की स्थापना करवाना था।

क्षेत्रवाद - पंजाबी लोगों को अलग क्षेत्र

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

वस्तुतः पंजाब संकट केवल एक कारण का परिणाम नहीं था बल्कि इन सभी कारणों का सम्मिलित प्रभाव था। इसमें ~~स्वाय~~ क्षेत्रवाद तो था ही परन्तु साथ में धार्मिक अलगाववाद, पृथक राष्ट्र की माँग भी शामिल थी।

<u>पंजाब संकट का अनुक्रम -</u>

भाषा के आधार पर 1966 में पंजाब, हरियाणा का विभाजन किया गया जिससे तीन राज्यों की स्थापना हुई - पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश तथा केन्द्र शासित प्रदेश चंडीगढ़।

भारतीय राजनीतिक वर्ग द्वारा धर्म के आधार पर नये राज्य की स्थापना न करने का प्रयास उचित ही था क्योंकि यह भारत में सम्प्रदायवाद

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

को बढ़ावा देना जिसका 1947 के स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान भारत भुक्तभोगी रहा था चुका है

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

13. What were the factors that led to the declaration of Emergency in 1975? Why is it considered as the dark period of Indian democracy? In this context, discuss the response to the imposition of emergency among the masses, media and political class.

1975 में आपातकाल की घोषणा के पीछे कौन-से कारक थे? इसे भारतीय लोकतंत्र का काला अध्याय क्यों माना जाता है? इस संदर्भ में, आपातकाल के आरोपण के प्रति जन-साधारण, मीडिया और राजनीतिक वर्ग के मध्य प्रतिक्रिया पर चर्चा कीजिए।

1975 में भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा आपातकाल की घोषणा की गई जिसके लिए उत्तरदायी कारक निम्न है -

(i) 1962 एवं 1965 में लगातार दो युद्धों के कारण शिथिल अर्थव्यवस्था

(ii) मंहगाई दर एवं मुद्रास्फीति में बढ़ोतरी

(iii) बेरोजगारी दर में बढ़ोतरी

(iv) भारतीय युवा वर्ग में बढ़ता असंतोष

(v) विपक्षी दलों का तीव्र होता आक्रमण

(vi) खाद्यान्न सुरक्षा का अभाव

भारतीय लोकतंत्र का काला अध्याय

- राजनीतिक स्वतंत्रता का दमन

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

(ii) न्यायपालिका की स्वतंत्रता पर चोट का प्रयास (42 वें, 38 वें संविधान संशोधन द्वारा)

(iii) अफसरशाही द्वारा आम जनता पर किया गया अत्याचार

(iv) विपक्षी दलों के नेताओं को गिरफ्तार करना

आपातकाल के प्रति प्रतिक्रिया -

आपातकाल के प्रति भारतीय जनता, राजनीतिक दलों एवं प्रबुद्ध वर्गों द्वारा कड़ा विरोध किया गया। जे. पी. द्वारा सम्पूर्ण क्रांति का नारा दिया जाना, विपक्षी दलों द्वारा गिरफ्तारियां देना इस सम्पूर्ण घटनाचक्र में का विरोध का प्रतीक है।

आपातकाल के विरोध स्वरूप ही आगामी चुनावों में इन्दिरा गांधी

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

को सत्ता से बाहर निकलना पड़ा तथा भारतीय इतिहास में केन्द्र में पहली गैर-कांग्रेसी सरकार बनी जिसने 44 वें संविधान संशोधन द्वारा पूर्वस्थिति स्थापना का प्रयास किया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

14. The role of women since independence has not been confined to issues of women alone, rather they have played an important role in the issues related to peasants, tribals, farmers, trade unions and environment. Discuss.

स्वतंत्रता के बाद से महिलाओं की भूमिका केवल महिलाओं के मुद्दे तक ही सीमित नहीं रही है, बल्कि उन्होंने खेतिहरों, आदिवासियों, किसानों, ट्रेड-यूनियनों एवं पर्यावरण से संबंधित मुद्दों पर भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। चर्चा कीजिए।

स्वतंत्रता पश्चात महिला आन्दोलन का क्षेत्र व्यापक एवं विस्तृत हो गया है। पूर्व में जहां महिला आन्दोलनों का मुख्य लक्ष्य महिला समानता की स्थापना, पितृसत्तात्मकता का अन्त, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक रूप से नारी सशक्तिकरण था वहीं आज यह बहुआयामी स्वरूप धारण कर चुका है।

महिला आन्दोलनों का स्वरूप -

1. किसानों के मुद्दे - इसके अन्तर्गत महिला किसानों के मुद्दे प्रमुखतया उठाये जाते

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

है। भारतीय कृषि में महिलाओं की प्रमुख भागीदारी है परंतु उनके पास भू-स्वामित्व अधिकार नहीं है।
नीति आयोग ने भी हाल ही में इस पर चिंता व्यक्त की है।

- आदिवासी मुद्दे -
अरुणा रॉय, इला भट्ट जैसी महिला कार्यकर्ता आदिवासियों के मुद्दों पर प्रमुखतया उठा रही हैं जैसे - नर्मदा आन्दोलन का मूल कारण आदिवासियों के विस्थापन का मुद्दा था।

ट्रेड यूनियन -
कार्यस्थलों पर महिलाओं के साथ भेदभाव एवं यौन-शोषण का मुद्दा उठाया गया जिससे 1997 में विशाखा केस, कार्यस्थल पर यौन उत्पी.न अधिनियम 2013, जे. एस. वर्मा समिति की स्थापना की गई,

पर्यावरणीय मुद्दे -

वंदना शिवा, गौरा देवी जैसी महिला कार्यकर्ता पर्यावरण की रक्षा तथा पर्यावरण को महिला अधिकारों से जोड़कर देखती हैं।

प्रभाव
- → नीति निर्माण में सहायता
- → महिलाओं की भागीदारी में बढ़ोतरी
- ↓ महिला अधिकारों का दायरा व्यापक
- ← जागरूकता में वृद्धि

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

15. Critically examine the point of view that cultural diversity in India has been a hindrance to the process of nation building.

इस दृष्टिकोण का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए कि भारत में सांस्कृतिक विविधता राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में बाधक रही है।

भारत विविध संस्कृतियों का संगम स्थल है जहां विभिन्न धर्म, जाति, भाषायें, सभ्यताओं वाले लोग एक साथ निवास करते हैं स्वतंत्रता पश्चात भारत के संदर्भ में कहा गया था कि यह सांस्कृतिक विविधता राष्ट्र के निर्माण में बाधक होगी।

सांस्कृतिक विविधता : बाधक के रूप में

→ भाषायी आधार पर राज्यों की मांग

→ विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों के कारण द्वेष भाव, दंगे होना

→ धर्म, भाषा के आधार पर आन्दोलन यथा- पंजाब संकट, वर्तमान में गोरखालैण्ड विवाद

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

→ विभिन्न संस्कृतियों में आपसी सामंजस्य का अभाव यथा - पूर्वोत्तर द्वारा स्वयं को राष्ट्र विकास से अलग मानना, उत्तरी राज्यों एवं दक्षिणी राज्यों में हिन्दी को लेकर विवाद

सांस्कृतिक विविधता : साधक के रूप में

→ भारत में सांस्कृतिक विविधता ने भारत को कमजोर नहीं किया बल्कि सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़ बनाया है।

→ भारतीय सांस्कृतिक परिषद विभिन्न राज्यों के मध्य उत्कृष्ट सम्बन्ध स्थापना का प्रयास कर रही है।

→ एक भारत : श्रेष्ठ भारत के माध्यम से विभिन्न राज्यों में एक दूसरे की संस्कृति को समझ बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

→ भारत में Mosaic Pot theory अपनाई गई है जिसमें विभिन्न संस्कृतियाँ को अपनी विविधताओं के साथ एक दूसरे के साथ मिलकर रहा करती हैं
→ धार्मिक भाषायी अल्पसंख्यको हेतु विशेष प्रावधान (अनु. 25, 26, 27, 28, 29, 30), भाषायी अल्पसंख्यक आयोग, भारतीय एकता परिषद की स्थापना इत्यादि।
– बहुसंस्कृतिवाद की धारणा।

16. Equality of opportunity requires not only open competition for advantaged positions but also fair access to qualifications required for those positions. Discuss in the Indian context.

अवसर की समानता, प्रतिष्ठित (लाभप्रद) पदों के लिए न केवल एक खुली प्रतिस्पर्धा की मांग करती है, अपितु उन पदों के लिए आवश्यक योग्यताओं तक न्यायोचित पहुंच की भी मांग करती है। भारतीय संदर्भ में चर्चा कीजिए।

अवसर की समानता से तात्पर्य

"राजनीतिक एवं प्रशासनिक पदों की प्राप्ति हेतु सभी व्यक्तियों को उपलब्ध समान अवसर से है।"

अवसर की समानता स्वतंत्रता का एक प्रमुख तत्व है जिसके अंतर्गत सभी व्यक्तियों को अपनी योग्यतानुसार पद प्राप्त करने का अधिकार है तथा भेदभाव रहित वातावरण की मांग की जाती है।

अवसर की समानता के दो मुख्य संदर्भ हैं-

- सकारात्मक
  - सकारात्मक विभेद
- नकारात्मक संदर्भ
  - सभी को समान अवसर
  - प्रतिस्पर्धा आधारित अवसर

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भारतीय संदर्भ - भारतीय संविधान में अनु. 16 द्वारा अवसर की समानता का प्रावधान किया गया है जिसके अन्तर्गत सभी व्यक्तियों को योग्यतानुसार पद प्राप्त करने का अधिकार होगा परन्तु अनु. 16(4) सकारात्मक विभेद की स्थापना करता है जिसके अन्तर्गत समाज के पिछड़े वर्ग यथा- स्त्रियां, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग इत्यादि को सामाजिक एवं शैक्षिक आधार पर आरक्षण प्रदान किया गया है।

आरक्षण < क्षैतिज आरक्षण / ऊर्ध्वाधर आरक्षण

प्रभाव

→ पिछड़े वर्गों को विकास की मुख्यधारा में लाना
- दलित सशक्तिकरण, महिला सशक्ति -

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

करना।

- समावेशी विकास की स्थापना।
- सामाजिक न्याय तक सभी की पहुंच।

इस प्रकार भारतीय संविधान अपनी प्रस्तावना के अनुसार ही अवसर का अधिकार देता है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

17. Portrayal of stereotypical sensational images of women not only reduces their identity to a mere object of desire but also reinforces the patriarchal structure of the society. Discuss with examples.

महिलाओं की स्टीरियोटाइप सनसनीखेज छवियों का निरूपण न केवल उनकी पहचान को एक तुच्छ चाह वाली वस्तु तक सीमित करता है बल्कि समाज की पितृसत्तात्मक संरचना को भी पुष्ट करता है। उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।

महिलाओं के प्रति समाज की सोच उसके समाज में प्रस्तुतीकरण पर निर्भर करती है। आज महिलाओं को वस्तु की भांति, दैहिक सुख के लिए एवं आकर्षक सामान (object) के रूप में प्रस्तुत करना महिला सशक्तिकरण नहीं बल्कि महिला का वस्तुकरण है।

महिला : वस्तुकरण क्यों ?

- आज विज्ञापनों, फिल्मों इत्यादि में महिलाओं की देह का इस्तेमाल उनको मात्र एक तुच्छ वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।
- बाजारवाद और उपभोक्तावाद ने

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

~~अपनी~~ अपनी वस्तुओं की बिक्री अधिकाधिक करने, बाजार में लाभ करने के लिए महिलाओं का प्रयोग अधिकाधिक किया जा रहा है यथा- विज्ञापनों में महिलाओं का इस्तेमाल

- यह महिलाओं की अभिव्यक्ति एवं स्वतंत्र पहचान पर बंधन के समान है
- स्त्री को केवल एक सेक्सुअल ऑब्जेक्ट के रूप में प्रस्तुत कर महिला की गरिमा का हनन जो कि अनु. 21 का उल्लंघन है
- गोरी महिलाओं के प्रति चाह के कारण रंगभेद, दुर्भावना एवं मानसिक तनाव भी बढ़ रहा है यथा- फेयर एंड लवली का विज्ञापन

पितृसत्तात्मक समाज का प्रभाव -

महिलाएं आज भी पितृसत्तात्मक सोच

के दायरे से बाहर नहीं निकल पायी है। आज भी वह एक वस्तु ही है बस उसे परिभाषित करने वाले शब्द बदल गये हैं। आज भी पुरुष की सोच महिला को केवल उपभोग्य वस्तु मानने की ही है।

अतः आवश्यकता है कि हृदय वस्तुकरण से आगे बढ़कर स्वयं की पहचान स्थापना का प्रयास किया जाये।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

18. Explain the concept of planned obsolescence with examples and discuss its impact for an economy. In this context, comment on Indian society's move towards throwaway culture.

नियोजित मूल्यह्रास अवधारणा की सोदाहरण व्याख्या कीजिए एवं अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव की चर्चा कीजिए। इस संदर्भ में उपयोग करो और फेंको संस्कृति (throwaway culture) की दिशा में बढ़ते भारतीय समाज पर टिप्पणी कीजिए।

नियोजित मूल्यह्रास से तात्पर्य

मुद्रा के मूल्य "वस्तुओं" की कम गुणवत्ता का बनाना है जिससे वे कम टिकाऊ बने तथा बाजारवाद का विकास हो।

यथा - चीन द्वारा बनाई जा रही बैटरियां, मोबाइल फोन, खिलौने इत्यादि

अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

सकारात्मक	नकारात्मक
- बाजार को बढ़ावा	- अनावश्यक खर्च
- कम्पनियों की लागत कम, लाभ अधिक	- बचत की अवधारणा का ह्रास
- GDP में वृद्धि	→ देशों की मूल्यवान संपत्ति अनावश्यक वस्तुओं पर
- उपभोक्तावाद को बढ़ावा	- पर्यावरण पर प्रभाव
- क्रयशक्ति समता में बढ़ोत्तरी	ई - कचरा

शो के कल्चर : भारतीय समाज पर प्रभाव

- उपयोग करो और फेंको संस्कृति भारतीय समाज पर नकारात्मक प्रभाव डालती है

- भारतीय समाज सामूहिक परिवार एवं मूल्यात्मक धारणाओं वाला समाज है जहां वस्तुओं को कीमती सामान की तरह रखा जाता है उस प्रवृति पर कुठाराघात होता है

⇒ सामूहिक परिवार का विघटन

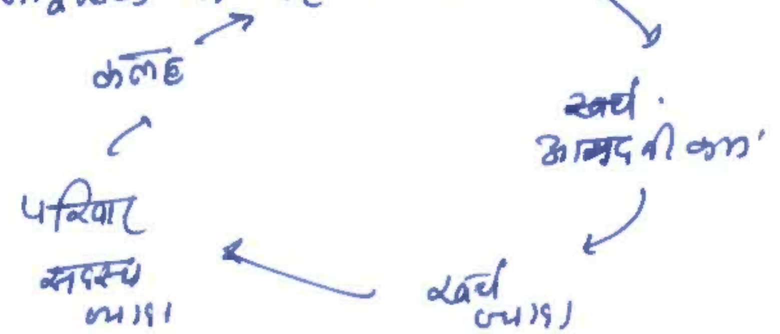

→ भारतीय परम्परा पर विपरीत प्रभाव जहां सहेज कर रखने की प्रवृति है

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

- पर्यावरण पर दुष्प्रभाव जबकि भारतीय संस्कृति पर्यावरण की रक्षा का संदेश देती है

- उपभोक्तावादी सोच, रिश्तों में कमजोरी

- व्यक्ति का मूल्यात्मक महत्व कम, वृद्धों को भार समझना

- अभिवृत्ति परिवर्तन

इस प्रकार कोको संस्कृति भारतीय संस्कृति से संगत नहीं है

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

19. Employment is a vital factor in empowerment of persons with disabilities. Analyse. Enumerate the steps taken by the government to increase employment of persons with disabilities.

विकलांग व्यक्तियों के सशक्तिकरण में रोजगार एक महत्वपूर्ण कारक है। विश्लेषण कीजिए। विकलांग व्यक्तियों के रोजगार को बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों को विस्तारपूर्वक बताइए।

विकलांग व्यक्तियों के प्रति समाज का रवैया हमेशा दोगला रहा है अतः, समाज में मूल रूप से दो प्रकार से व्यक्ति का मूल्य आंका जाता है

साध्यात्मक मूल्य	साधनात्मक मूल्य
↓	↓
व्यक्ति को साध्य मानना	व्यक्ति को साधन मानना

रोजगार में वृद्धि व्यक्ति का साधनात्मक मूल्य भी बढ़ाती है

प्रभाव

- समावेशी विकास की स्थापना
- सामाजिक न्याय का कारक
- विकलांगों में आत्मविश्वास की स्थापना
- आर्थिक सशक्तिकरण का प्रयास

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

- देश की GDP में योगदान

सरकार द्वारा उठाये गये कदम -

- सुगम्य भारत अभियान
- दिव्यांग जन अधिकार अधिनियम 2016 द्वारा विकलांग जनों को 4 सरकारी नौकरियों में 4% आरक्षण देना
- निकट स्थित शिक्षण संस्थान में निःशुल्क शिक्षा का अधिकार
- कार्यस्थल पर विकलांगता के कारण होने वाले अत्याचार पर रोक।
- CBSE द्वारा विकलांग लोगों के लिए ब्रेल लिपि में मानचित्र प्रकाशित करना।

इस प्रकार विकलांगजनों को विकास की मुख्यधारा में लाकर उन्हें विकास का सहगामी बनाया जा सकता

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

है जो कि भारतीय प्रस्तावना में स्पष्टतः उल्लेखित है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

20. While many see globalisation as synonymous with westernisation, evidence suggests that the process of globalisation has not been a one way street. Comment.

यद्यपि कई लोग वैश्वीकरण को पश्चिमीकरण के पर्यायवाची के रूप में देखते हैं, किंतु प्रमाण यह प्रदर्शित करते हैं कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया एकपक्षीय मार्ग नहीं रही है। टिप्पणी कीजिए।

वैश्वीकरण से तात्पर्य – " आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, क्षेत्रीय रूप से सम्पूर्ण विश्व का एक वृहद बाजार में रूपान्तरण "

वैश्वीकरण का मूल रूप से सम्बन्ध पाश्चिमी उपभोक्तावादी संस्कृति से जोड़कर देखा जाता है जिसके अन्तर्गत -

- सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास
- पर्यावरण का अनवरत दोहन
- बाजारवाद का विस्तार
- उपभोक्तावाद
- स्वतंत्रता पर अधिक जोर, समानता को कम महत्व
- Laisse faire (अहस्तक्षेपकारी राज्य) का सिद्धान्त

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

परन्तु आज वैश्वीकरण पाश्चिमी प्रभाव का ही नाम नहीं है बल्कि उस क्षेत्र विशेष की संस्कृति से सम्बद्ध हो गया है.

(i) आधुनिकता के साथ परम्परा का समन्वय
यथा - त्योहारों इत्यादि पर व्हाट्स एप, फेसबुक से बधाई संदेश देना

(ii) त्योहारों, संस्कृति के साथ बाजारवाद
यथा - मैकडोनाल्ड द्वारा नवरात्रा स्पेशल बर्गर निकालना

(iii) विकास के साथ संरक्षण
यथा - पर्यावरण दोहन के साथ पर्यावरण संरक्षण भी - पेरिस एग्रीमेन्ट, क्योटो समझौता

(iv) बाजारवाद के साथ सामाजिक सुरक्षा
यथा - भारत में मुक्त अर्थव्यवस्था के साथ सामाजिक योजनाये।

इस प्रकार वैश्वीकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है और इसका स्वरूप समयानुसार परिवर्तित होता रहता है

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)